

संस्कृत

५२

कवच

शिव कवच



६९८/स्मि. ४८९

(1)

श्रीगणेशायनमः॥ॐ नमो भगवते सदा शिवाय सकल तत्वात्मकाय सकल
लतलविहाराय सकल लोकैककर्त्रे सकल लोकैकभर्त्रे सकल लोकैकहर्त्रे
सकल लोकैकगुरवे सकल लोकैकसाक्षिणे सकल निगमगुण्याय सकल
वरप्रदाय सकल दुःखहर्त्रे भक्तजाय सकल जगदभयंकराय सकल लोकैक
केशंकराय शशांकरोत्तराय शश्वतनिजावासाय निर्गुणाय नि
रूपाय निराभासाय निरामयाय निष्पंचाय निष्कलंकाय निर्द्वंदाय निः
संगाय निर्मलाय निर्गमाय निरुपमाय निर्विकल्पाय निराधाराय नित्यरुक्
परिपूर्ण सच्चिदानंदाय परमेश्वराय तत्काशतेजोरूपाय जय जय मह
रुद्र महारौद्र भद्रावतार महामैत्रवकल्यांत भैरव काल भैरव कपाल
माला धर रवदां गरुड चर्मपाशं कुश उमरु इत्युत्तम पाषाण गदा श
क्तिभिर्दिघालातो मरु सुसल मुड्गुरासपट्टिश परशु परियुक्तं
उशतप्रीवकायुधभूषणकर सहस्रमुख दंष्ट्राकराल विकृष्ट

(2)

[illegible]



मूळ प्रत पाहण्यासाठी संपर्क

इतिहासाचार्य वि.का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे
राजवाडे पथ, गल्ली नं. १, धुळे-४२४००१ (महाराष्ट्र)
दूरध्वनी क्रमांक (०२५६२) २३३८४८
Email ID : rajwademandaldhule@gmail.com